~~25~~

~~10~~

~~No. 25~~ Sh. No. 23

९३२
कारि।

A brief commentary
on karikavali Sharada
Logic

[redacted]

पी॰ सं॰ 4137 (45)

कारिकावली (गुरुमुखीलिपि)

न्याय - दर्शन

10 - अपूर्ण

25

164

कालिकावली

पी० सं० 4137

ॐ नमः शिवाय ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पञ्चानि समस्ताधिकानां सूक्ष्माणां पूरयति भवक्षु विश्व विततया तत्त्वसमस्त
स्वपरिभावस्य ॥१५॥

किंतु ज्ञानं तथा तेजः पवने

मनाग्व्याप्त पवापवन्नुत्तर

क्रियावेगात्मक वायौ ॥१५॥

लौकिक [illegible] ॥ [illegible] विशेष [illegible]
[illegible] लौकिक [illegible]

कालः [illegible] मित्या भवगत [illegible] ॥१६॥

तुं पंचमं भवत्ता विद्यात्मप

पाञ्चभौतिकानि सर्वाणि भवन्ति

त्रिकं ॥१६॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆱𑆼𑆠𑆼𑆥𑆳𑆢𑇀𑆫𑆶𑆝𑆮𑆴𑆢𑇀𑆣𑆶𑆱𑆛𑇀𑆛

𑆢𑇀𑆫𑆳𑆱𑆴𑆑𑆩𑆳𑆱𑆴𑆩𑆳𑆥𑆳𑆝𑆿

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆥𑆳𑆢𑆼𑆯𑇀𑆫𑆴𑆪𑆩𑆳𑆥𑆴𑆱

𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑆩𑆳 ॥𑇑𑇓𑇐॥ 𑆯𑆴𑆪𑆁𑆠𑆶𑆩

𑆮𑆼𑆑𑇀𑆬𑆩𑆠𑆬𑆳𑆬𑆱𑆳𑆮𑆼𑆑𑆥𑆫𑆂 𑆩𑇓𑇕𑆂

𑆥𑆳𑆢𑇀𑆩𑆼𑆫𑆩𑆛𑆴𑆂𑆯𑇀𑆫𑆳𑆠𑆳

𑆢𑆼𑆯𑇀𑆫𑆳𑆮𑆱𑆶𑆑𑆩𑆶𑆩𑆼 ॥𑇑𑇓𑇓॥

[illegible]

समवायिकारणत्वं द्रव्यस्यै

वेति विज्ञेयम् गुणकर्म

मात्रवृत्ति ज्ञेयमथाप्यसमवा

[illegible]

यिहेतुत्वम् ॥२३॥ अन्यत्र

[illegible]

नित्यद्रव्येभ्यः आश्रितत्वमिहो

च्यते क्षित्यादीनां नवानां तु

[illegible]

॥२४॥

द्रव्यत्वं गुणयोगिता ॥२५॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]